आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

◉ मुद्रण तारीख-18-01-2016 ◉ अंक-407 ◉ तारीख-19 जनवरी 2016, पौष शुक्ल पक्ष-10 ◉ मंगलवार ◉ उदयपुर ◉ कुल पृष्ठ-2 ◉ मूल्य-1 रूपया ◉ पृष्ठ-01

अनमोल वचन (सत्यसांई बाबा)

नाम स्मरण और जप के द्वारा भक्ति और साधना की वृद्धि करो।

एक माह में उच्च शिक्षा का कोर्स मोबाइल एप पर : ईरानी

केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी ने घोषणा की है कि एक माह के अंदर स्नातक और परास्नातक कक्षाओं के विद्यार्थियों को ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल उपलब्ध करवाया जाएगा। करीब बारह हजार लर्निंग मॉड्यूल मोबाइल एप के जरिये निःशुल्क उपलब्ध होंगे।

इसके अलावा एनसीईआरटी व सीबीएसई की पाठ्य पुस्तकों को ई–पाठशाला नाम की वेबसाइट व मोबाइल एप के जरिये ऑनलाइन करने और भारत सरकार द्वारा लॉन्च सारांश एप की भी जानकारी दी।

स्मृति ने कहा कि अभी जो व्यवस्था है, उसमें अभिभावक माह में एक बार होने वाली पैरेंट्स –टीचर्स मीटिंग में ही बच्चों की शैक्षिक गतिविधियों के बारे में जानकारी हासिल पर पाते हैं। सारांश एप के जरिये अभिभावक हर दिन और हर सप्ताह बच्चे की शैक्षिक स्थिति से अवगत हो सकेंगे।

महाराणा प्रताप के मृत्यु पर अकबर की प्रतिक्रिया

अकबर महाराणा प्रताप का सबसे बड़ा शत्रु था, पर उनकी यह लड़ाई कोई व्यक्तिगत द्वेष का परिणाम नहीं थी, हालांकि अपने सिद्धांतों और मूल्यों की लड़ाई थी । एक वह था जो अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था , जब की एक तरफ यह थे जो अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए संघर्ष करते रहे । महाराणा प्रताप के मृत्यु पर अकबर को बहुत ही दुःख हुआ क्योंकि ह्रदय से वो महाराणा प्रताप के गुणों का प्रशंसक था । यह समाचार सुन अकबर रहस्यमय तरीके से मौन हो गया और उसकी आँख में आंसू आ गए । अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए अपने पूरा जीवन का बलिदान कर देने वाले ऐसे वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप और उनके स्वामिभक्त अश्व चेतक को कोटि–कोटि प्रणाम ।

नारी रत्ना – मेवाड़ की रानी अजबदे पँवार

अजबदे स्वतन्त्रता प्रेमी, स्वाभिमानी वीरवर महाराणा प्रताप की रानी थी। तत्कालीन अन्य रियासतों के राजा महाराजा मुगल बदशाह अकबर की अधीनता स्वीकार करके आराम की जिंदगी बिता रहे थे परंतु प्रताप ने अपना शीश नहीं झुकाया था। हल्दी घाटी में अद्‌भुत शौर्य का प्रदर्शन करने वाला यह वीर अपने आन मान पर दृढ़ था। मुगलों से निरन्तर संघर्ष करते रहने के कारण महाराण प्रताप की सैनिक शक्ति धीरे–धीरे कम होती जा रही थी। ऐसी स्थिति में दुर्ग के भीतर रहकर सशक्त शत्रु का अधिक समय तक डटकर मुकाबला करना संभव नहीं था, अतः राण प्रताप की वीर पत्नी अजबदे पँवार ने राजमहलों का परित्याग कर जंगल में आश्रय लेने का सुझाव अपने पति को दिया।

राणा प्रताप अपनी कोमलांगी रानी के द्वारा जंगल में प्रश्रय लेने के स्वैच्छिक विचार से एक बार तो हिचकिचाये और सकुचाते हुए अजबदे की ओर देखते हुए मन में यह विचार किया यह जंगल के बीहड़ रास्तों पर कैसे चल पायेगी? कैसे यह वन्य–जीवन के कष्टों को झेलेगी ? अजबदे ने महाराणा की दुविधा को भांप लिया और कहा – ''जंगल की शरण लेने में हिचकिचाट और संकोच कैसा। राजा राम चौहद वर्ष और पांडव बारह वर्ष तक वनवास में रहे। ऐसे कष्ट तो हमारे पूर्वजों ने सहे हैं। यह कष्ट तो सच्चे राजपूत की कसौटी है।'' अपनी जीवन संगिनी के ऐसे विचारों से राणा प्रताप प्रभावित हुए और संकोच छोड़ वन को चल दिये।

स्वाधीनता प्रेमी उस महान् वीर का साहस जहां डगमगाने लगता, धैर्य का बांध टूटने लगता, उस समय वीर ह्रदया अजबदे पंवार ही अपने पति राणा प्रताप को आश्वस्त कर उनमें आत्मबल का संचार करती। अजबदे ने अपने पति के स्वाधीनता के प्रण को पूरा करने के लिए राज वैभव का सुख ही नहीं त्यागा, कठिन से कठिन घड़ी में भी हर पल साये की भांति साथ रहकर दुख बांटा। रानी अजबदे पंवार दुख को सदा रहने वाली वस्तु नहीं मानती थी और फिर उससे अधिक तो उसे मर्यादा और धर्म की रक्षा करने में गौरव का अनुभव होता था।

एक बार जंगल में नन्हें राजकुमार के हाथ से घास की बनी रोटी जब वन बिलाव छीन कर भाग जाता है और भूख से दुखी हो वह रोने लगता है तो पिता महाराणा प्रताप का पत्थर दिल भी हिल जाता है। ''वर्षों कष्ट सहने के बाद भी मेवाड़ का राजकुमार एक रोटी के टुकड़े का मोहताज हो, ऐसी स्वाधीनता किस काम की ?'' जब ऐसे विचार के भावावेग में वह अकबर को संधि बाबत पत्र लिखने को तत्पर होता है तो इसकी खबर पात ही अजबदे पंवार को बहुत दुख हुआ। पति को वह समझाती है कि ''हे प्राणनाथ तुर्क की अधीनता में हमको फूल भी शूल लगेंगे। आप हमारे कष्टों से विचलित न हों। आपके ह्रदय में ऐसा विचार लाना आपकी बहुत बड़ी भूल है।'' वह अपने पति को प्रचीन प्रसंगों का स्मरण करवाती हुई उसे अपने प्रण पर दृढ़ रहने को प्रोत्साहित करती है। उसका वर्णन कवि के शब्दों में इस प्रकार है–

सीता महारानी कहां कानन तैं लौटि आइ,
सैव्या हरिचन्द्र साथ विपति कहां गिरी।
निद्रावश तल को बिछोरी कहां भाग गई,
रानी दमयंती कहां भई अध गामिनी।
धर्म हेत कष्ट सहि जानत तिया न कहां
करि वे सुलह बात ताहि तैं प्रभु मानी।
समता न पाऊं उन देवियों के साथ तोऊ,
प्राणनाथ ! रावरी कहाऊं अरधांगिनी।

इस प्रकार अजबदे ने राजपूत अर्द्धांगिनी धर्म का पालन करते हुए पति को सही दिशा बता उसकी कीर्ति को अमर बनाया।

हल्दीघाटी का युद्ध

18 जुन 1576 ई. को महाराणा प्रताप एवं अकबर की शाही मुगल सेना के बीच हल्दीघाटी में एक एतिहासिक युद्ध हुआ। इस युद्ध में मेवाड की सेना का नेतृत्व महाराणा प्रताप ने किया था। इस युद्ध में महाराणा प्रताप की तरफ से लडने वाले एकमात्र मुस्लिम सरदार थे –हकीम खाँ सूरी। उनकी इस जंग में राणा पूंजा, झाला मान सिंह एवं हजारों भील उनके साथ थे। भामाशाह जैसे दानवीर ने प्रताप की मदद की, ताकि उनकी सेना में हथियारों व अन्य आवश्यक वस्तुओं की कमी ना पडे। हल्दीघाटी में एक छोटा संकीर्ण दर्रा था और ये ही आने जाने का रास्ता था ।

एक बार में सिर्फ एक घुडसवार ही इस रास्ते से निकल सकता था और पहाडी रास्तों व जंगलों से राणा प्रताप की सेना खासी वाकिफ थी ।इस युद्ध में मुगल सेना का नेतृत्व मानसिंह तथा आसफ खाँ ने किया। इस युद्ध में बींदा के झालामान ने अपने प्राणों का बलिदान करके महाराणा प्रताप के जीवन की रक्षा की।

विशाल मुगल सेना का सामना महाराणा प्रताप की छोटी सी सेना ने किया। कहते हैं कि यहां इतना खून बहा कि एक स्थान पर तलाई भर गई, की ओर से अभूतपूर्व समर्थन मिला। यद्यपि धन और उज्ज्वल भविष्य ने उनके सरदारों को काफी प्रलोभन दिया, परन्तु किसी ने भी उनका साथ नहीं छोड़ा। इनकी वीरता और स्वार्थ–त्याग का वृत्तान्त मेवाड़ के इतिहास में अत्यन्त गौरवमय समझा जाता है। महाराणा की यह प्रतिज्ञा अक्षुण्ण रही और जब वे (विक्रम संवत 1653 माघ शुक्ल 11) तारीख 19 जनवरी, सन 1597 ई. में परमधाम की यात्रा करने लगे, उनके परिजनों और सामन्तों ने वही प्रतिज्ञा करके उन्हें आश्वस्त किया। अरावली के कण–कण में महाराणा का जीवन–चरित्र अंकित है। शताब्दियों तक पतितों, पराधीनों और उत्पीडितों के लिये वह प्रकाश का काम देगा। चित्तौड़ की उस पवित्र भूमि में युगों तक मानव स्वराज्य एवं स्वधर्म का अमर सन्देश झंकृत होता रहेगा।

पुण्यदिवस पर शत्–शत् नमन।

महाराणा प्रताप का नाम भारतीय इतिहास में वीरता और दृढ़ प्रतिज्ञा के लिए अमर है। वे उदयपुर, मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश के राजा थे। वह तिथि धन्य है, जब मेवाड़ की शौर्य–भूमि पर मेवाड़–मुकुट मणि राणा प्रताप का जन्म हुआ। वे अकेले ऐसे वीर थे, जिसने मुगल बादशाह अकबर की अधीनता किसी भी प्रकार स्वीकार नहीं की। वे हिन्दू कुल के गौरव को सुरक्षित रखने में सदा तल्लीन रहे।

जन्म –

राजस्थान के कुम्भलगढ़ में राणा प्रताप का जन्म सिसोदिया राजवंश के महाराणा उदयसिंह एवं रानी जैवन्ताबाई के घर 9 मई, 1540 ई. को हुआ था। प्रताप का बचपन का नाम कीका था। स्वाभिमान तथा धार्मिक आचरण, बहादुरी उनकी विशेषता थी।

राज्याभिषेक –

महाराणा प्रताप के काल में दिल्ली पर अकबर का शासन था। हिन्दू राजाओं की शक्ति का उपयोग कर दूसरे हिन्दू राजाओं को अपने नियंत्रण में लाना मुगलों की नीति थी। अपनी मृत्यु से पहले राणा उदयसिंह ने अपनी सबसे छोटी पत्नी के बेटे जगमाल को राजा घोषित किया, जबकि प्रताप जगमाल से बड़े थे। प्रताप अपने छोटे भाई के लिए अपना अधिकार छोड़कर मेवाड़ से जाने को तैयार थे, किंतु सभी सरदार राजा के निर्णय से सहमत नहीं हुए। प्रताप ने भी सभी राजपूत सरदारों तथा लोगों की इच्छा का आदर करते हुए मेवाड़ का नेतृत्व करने का दायित्व स्वीकार किया। इस प्रकार बप्पा रावल के कुल की अक्षुण्ण कीर्ति की उज्ज्वल पताका, राजपूतों की आन एवं शौर्य का पुण्य प्रतीक, राणा साँगा का यह पावन पौत्र (विक्रम संवत 1628 फाल्गुन शुक्ल 15) तारीख 1 मार्च सन 1573 ई. को सिंहासनासीन हुआ।

महाराणा की प्रतिज्ञा –

प्रताप ने प्रतिज्ञा की थी कि वह माता के पवित्र दूध को कभी कलंकित नहीं करेंगे। चित्तौड़ के उद्धार से पूर्व पात्र में भोजन, शैय्या पर शयन दोनों मेरे लिये वर्जित रहेंगे, इस प्रतिज्ञा का पालन उन्होंने पूरी तरह से किया।

प्रताप को अपने सरदारों

घोड़े के सिर पर बांधा था हाथी की मुखौटा

मुगल सेना में हाथियों की संख्या ज्यादा होने के कारण चेतक (घोड़े) के सिर पर हाथी का मुखौटा बांधा गया था ताकि हाथियों को भरमाया जा सके। कहा जाता है कि चेतक पर सवार महाराणा प्रताप एक के बाद एक दुश्मनों का सफाया करते हुए सेनापति मानसिंह के हाथी के सामने पहुंच गए थे। उस हाथी की सूंड़ में तलवार बंधी थी। महाराणा ने चेतक को एड़ लगाई और वो सीधा मानसिंह के हाथी के मस्तक पर चढ़ गया। मानसिंह हौदे में छिप गया और राणा के वार से महावत मारा गया। हाथी से उतरते समय चेतक का एक पैर हाथी की सूंड़ में बंधी तलवार से कट गया।

गतांक से आगे ...

मानव मन के बोल

महाजनों येन गत: पन्था:

तो मैं कह रहा था लोहिया जी भोजन के बाद उठे और बोले मुझे रसोईघर में ले चलो। मैं माताओं और बहनों को धन्यवाद देना चाहता हूँ। साथी ने बोला रसोई दूर है। बीच में कीचड़ भी है, अंधेरा भी है, धुंआ भी है रसोईघर में।

बोले मैं तो जाना चाहता हूँ। धुँए में, कीचड़ में, अंधेरे में भी जाऊँगा।

वह पथ क्या पथिक पथिकता क्या,
जिस पथ में बिखरे शूल न हों।
नाविक की धैर्य परिक्षा क्या,
यदि धाराएँ प्रतिकूल न हों।।

प्रतिकूल धारा में चलने वाले लोहिया जी, वो आगे–आगे, हम 10–20 पीछे–पीछे। मैंने देखा, मैंने अनुभूति की कि माताजी के सामने हाथ जोड़ लिए रसोईघर में जाकर। माताओं व बहनों को कहा आपको बहुत धन्यवाद है। आपने बहुत परिश्रम किया, आपने बहुत स्वादिष्ट भोजन कराया। देखो आपके नेत्र में धुंआ जा रहा है। आपने कितनी तकलीफें उठाई है। आपको धन्यवाद है। तो लोहिया जी ने हाथ जोड़ लिए। उनके सुख–दुःख की बातें करते रहे। पुनः उनको प्रणाम किया तो मेरी आँखे भर आई ।

मैंने कहा देखो! बड़े आदमी होने का अर्थ यही है। आपके गाँव में किसी बड़े आदमी ने जन्म लिया। सरपंच, पंच भी बैठे थे। बैठक भी की, विचार विमर्श भी किया कि साब! माके तो टाबर ही जन्में। हमारे यहाँ तो बच्चे ही जन्मते है। अपने गुणों से, सहनशीलता से, अपने धीरज से ...

क्रमश अगले अंक में ...

सम्पादकीय

एक बार देवताओं ने विष्णु भगवान से कहा ''हमें स्वर्ग से भी किसी अच्छे लोक में भेज दीजिये... विष्णु ने उन्हें मनुष्य लोक भेज दिया और कहा कि वहाँ ''सुख और सौंदर्य तभी दृष्टिगोचर होगा, जब तुम लोग करूणा जीवित रखोगे और सेवाधर्म का रसास्वादन करोगे।''

देवताओं ने आकर सभी को दुःखों में डूबे हुए देखा। उन्होंने पीड़ितों व दुःखियों की सेवा शुरू कर दी। कोई मेघ बनकर बरसने लगा। किसी ने उष्मा और उर्जा बिखेरी। कोई रात्रि में शीतलता भरा प्रकाश बाँटने लगा। किन्हीं ने वनोषधियों का रूप बनाया और अपरिग्रही बनकर लोगों की कष्ट मुक्ति का उपाय बताने में लीन हो गये।

बहुत दिन बाद जब विष्णु ने नारद जी को भेजा तो पता लगा कि ''देवता लोग सेवा के आनन्द को स्वर्ग से बढ़कर मानते है। और उनका वापिस लौटने का मन नहीं है।''

जी हां, ऐसा ही लगने लगता है– जब आदमी अपने आप को भूलकर स्वयं को परहित में लगा देता है। जब हम संस्थान के शिविरों में किसी गरीब बेसहारा से मिलते हैं, तो सब कुछ भूल जाते हैं। यही कारण है कि किसी बीमार की सेवा में जब हमारा ध्यान लग जाता हैं तो ध्यान हटता नहीं। परसेवा ही मनुष्य जीवन का सच्चा आनंद हैं जिसके लिए देवता तक लालायित रहते हैं।

हमें तो प्रभु की कृपा से वह सब मिला हुआ है– जिसकी देवताओं ने प्रभु से प्रार्थना की थी। आज मनुष्य जीवन, पारिवारिक सुसंस्कार एवं नारायण सेवा संस्थान जैसा सेवा का क्षेत्र सभी कुछ तो मिला है– हमें? आइये, हम सभी यह सद् संकल्प फिर से दोहराएं कि सेवा का कोई भी अवसर हाथ से जाने न देंगे।

- जब अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन भारत दौरे पर आ रहे थे तब उन्होने अपनी माँ से पूछा कि हिंदुस्तान से आपके लिए क्या लेकर आए । तब माँ का जवाब मिला, उस महान देश की वीर भूमि हल्दी घाटी से एक मुट्ठी धूल लेकर आना, जहाँ का राजा अपने प्रजा के प्रति इतना वफादार था कि उसने आधे हिंदुस्तान के बदले आपनी मातृभूमि को चुना। बद किस्मती से उनका वो दौरा रद्द हो गया था। बुक ऑफ प्रेसिडेंट यु. एस. ए. किताब में आप ये बात पढ़ सकते हैं।
- अकबर को महाराणा प्रताप का इतना भय था कि वह कई बार रात को सोते समय डर कर नींद से जाग जाता था।
- महाराणा प्रताप के भाले का वजन 80 किलो था और कवच का वजन 80 किलो, कवच, भाला, ढाल, और हाथ में तलवार का वजन मिलायें तो 207 किलो। आज भी महाराणा प्रताप की तलवार, कवच आदि सामान उदयपुर राजघराने के संग्रहालय में सुरक्षित है।
- अकबर ने कहा था कि अगर राणा प्रताप मेरे सामने झुकते हैं तो आधे हिंदुस्तान के वारिस वो होंगे, पर बादशाही अकबर की ही रहेगी।
- राणाप्रताप के घोड़े चेतक का मंदिर भी बना जो आज हल्दी घटी में सुरक्षित है। इसी जगह चेतक की मृत्यु हुई थी।
- महाराणा ने जब महलों का त्याग किया तब उनके साथ लुहार जाति के हजारों लोगों ने भी घर छोड़ा और दिन रात राणा की फौज के लिए तलवारें बनायीं। यह समाज आज तक अपने उस व्रत पर कायम है। स्थायी रूप से बसने की बजाय अपनी बैलगाड़ी को ये अपना घर बनाते हैं। इसी समाज को आज गुजरात, मध्यप्रदेश और राजस्थान में गड़लिया लौहार कहा जाता है, नमन है ऐसे लोगों को।

प्रताप से जुड़े कुछ तथ्य

- हल्दी घाटी के युद्ध के 300 साल बाद भी वहाँ की जमीनों में तलवारें पायी गयी। आखिरी बार तलवारों का जखीरा 1985 में हल्दी घाटी में मिला।
- 'महाराणा प्रताप को अस्त्र शस्त्र की शिक्षा जयमल मेड़तिया ने दी थी, जो 8000 राजपूतों को लेकर 60000 मुगलों से लड़े थे। उस युद्ध में 48000 सैनिक मारे गए

थे जिनमें 8000 राजपूत और 40000 मुगल थे।
- राणा प्रताप के देहांत पर अकबर भी रो पड़ा था।
- मेवाड़ के आदिवासी भील समाज ने हल्दी घाटी में अकबर की फौज को आपने तीरों से बींध डाला था। वो राणाप्रताप को अपना बेटा मानते थे और राणा जी बिना भेद भाव के उन के साथ रहते थे। आज भी मेवाड़ के राज चिन्ह पर एक तरफ राजपूत है तो दूसरी तरफ भील।
- राणा का घोडा चेतक महाराणा को 26 फीट का दरिया पार करने के बाद वीर गति को प्राप्त हुआ। उसकी एक टांग टूटने के बाद भी वह दरिया पार कर गया।
- राणा का घोडा चेतक भी बहुत ताकतवर था। उसके मुँह के आगे हाथी की सूंड लगाई जाती थी। राणा के पास ऐतक और चेतक नाम के दो घोड़े थे।
- मरने से पहले महाराणा ने खोया हुआ 85 प्रतिशत मेवाड़ फिर से जीत लिया था। महलों को छोड़ वो 20 साल मेवाड़ के जंगलो में घूमे।
- महाराणा प्रताप का वजन 110 किलो और लम्बाई थी 7. 5 फीट। वे दो म्यान वाली तलवार और 80 किलो का भाला रखते थे हाथ में।
- 'मेवाड़ राजघराने के वारिस को एकलिंग जी भगवान का दीवान माना जाता है।
- छात्रपति शिवाजी भी मूल रूप से मेवाड़ से ताल्लुक रखते थे। वीर शिवाजी के परदादा उदयपुर महाराणा के छोटे भाई थे।
- 'अकबर को अफगान के शेख रहमुर खान ने कहा था अगर तुम राणा प्रताप और जयमल मेड़तिया को अपने साथ मिला लो तो तुम्हे विश्व विजेता बनने से कोई नहीं रोक सकता, पर इन दोनों वीरों ने जीते जी कभी हार नहीं मानी।
- नेपाल का राजपरिवार भी चित्तौड़ से निकला है, दोनों में भाई और खून का रिश्ता है।
- मेवाड़ राजघराना आज भी दुनिया का सबसे प्राचीन राजघराना है।

ऐतिहासिक झील – जयसमंद

जयसमंद वन्यजीव अभयारण्य अपनी विविधता, प्राकृतिक सौन्दर्य, वन्यजीवों, लबालब विशाल झील, अरावली की सघन वनाच्छादित पहाड़ियों तथा ऐतिहासिक धरोहर के लिए विश्वप्रसिद्ध है। जो उदयपुर से 40 किमी दक्षिण पूर्व में है। जयसमंद झील एशिया की मानव निर्मित मीठे पानी की सबसे बड़ी झील है, जिसका क्षेत्रफल 88 किमी है। इसकी पाल का स्थापत्य और प्राकृतिक छटा इतनी मनमोहक है कि पर्यटक खिंचे चले आते हैं। जयसमंद के आसपास कलात्मक व ऐतिहासिक धरोहर व विशाल वर्ल्डलाइफ सेन्चुरी है।

–: आमेर का किला :–

जयपुर, राजस्थान की राजधानी से लगभग 11 किलो मीटर की दूरी पर आमेर किले का संकुल स्थित है। आमेर का किला दिल्ली – जयपुर राजमार्ग की जंगली पहाडियों के बीच अपनी विशाल प्राचीरों सहित नीचे माओटा झील के पानी में छवि दिखाता खड़ा हुआ है।

राजपूत वास्तुकला के एक उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में यह कच्छवाह शासकों की पुरानी राजधानी था। मूल रूप से यह महल राजा मानसिंह ने बनावाया था और आगे चलकर सवाई जयसिंह ने इस पर कुछ और चीजें जोड़ी।

दीवान ए आम या जनता के दरबार का कक्ष महल के अंदर है और दीवान एक खास या निजी श्रोताओं का कमरा और सुख निवास भी महल के अंदर है जहां वातानुकूलन के प्रयोजन हेतु पानी के चैनलों से गुजरती हुई ठण्डी हवा बहती है।

रानियों के निजी कक्षों में जालीदार परदों के साथ खिड़कियां हैं ताकि राज परिवार की महिलाएं शाही दरबार में होने वाली कार्रवाइयों को गोपनीयता पूर्वक देख सकें। यहां जय मंदिर भी है, जो शीश महल के साथ काफी प्रसिद्ध है।

अपने बच्चे को सिखाएं जिंदगी से जुड़ी ये सीख

बच्चे की परवरिश उसके माता–पिता की जिम्मेदारी होती है। वो अपने बच्चे को ऐसी बातें सिखाते समझाते हैं जो जिंदगीभर उनके काम आए। ऐसी ही कुछ बातें हम यहां साझा कर रहे हैं, जो हर अभिभावक को अपने बच्चे को समझानी चाहिए।

परवरिश में रखें ये बातें याद –

जब किसी इंसान की जिंदगी में उसकी औलाद आती है तो उसकी खुशी इतनी होती है कि उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता।

हम अपने बच्चे को अच्छी परवरिश देना चाहते हैं, पर कई बार हम उन बातों को नजरअंदाज कर देते हैं जो जिंदगी जीने के लिए उनके बहुत काम आ सकती है। अगर उन्हें अच्छे आचरण और जिंदगी के फलसफों के बारे में नहीं सिखाया गया तो वह समाज में एक अभद्र व्यक्ति के रूप में खराब व्यवहार के साथ बड़ा होगा।

बड़ों को सम्मान देना–

बड़ों का सम्मान करना एक ऐसी चीज है जो धीरे–धीरे समाज से खत्म हो रही है। एक समय था, जब उम्र में छोटे लोग बड़ों के सामने बैठते तक नहीं थे। अपने बच्चों को जब आप जिंदगी और उसे जीने के तारीके समझाएं तो इस बात का जरूर ध्यान रखें कि आपके बच्चे को बड़ों का सम्मान करने की अच्छी आदत पड़ जाए।

माफी मांगना –

किसी को सॉरी कहने का यह मतलब नहीं कि आप कमजोर हैं बल्कि यह आपके मजबूत चरित्र को दर्शाता है। बच्चे के लिए आप खुद मिसाल बनें और उन्हें सिखाएं कि रिश्ते बहस से बढ़ कर होते हैं। इससे आपके बच्चे की जिंदगी बहुत आसान हो जाएगा।

समय की पाबंदी –

बच्चों को समय की कीमत जरूर समझनी चाहिये। इसकी शुरूआत बच्चे के स्कूल की शुरूआत के साथ की जानी चाहिए। इससे वे अपनी जिंदगी के महत्वपूर्ण कामों में कभी भी देर से नहीं पहुंचेंगे। समय की पाबंदी आने से उनकी जिंदगी में आगे के बहुत से काम आसानी से हो जाएंगे।

खाने के तौर–तरीके –

अपने बच्चे को खाने के तौर–तरीके सिखाना न भूलें। युवावस्था में उन्हें जो और का सहारा बन गया है। वे दादा–दादी तो है, लेकिन उसके पोता–पोती नहीं हैं।

– **मुनि संत श्री तरूण सागर जी महाराज**

कड़वे प्रवचन

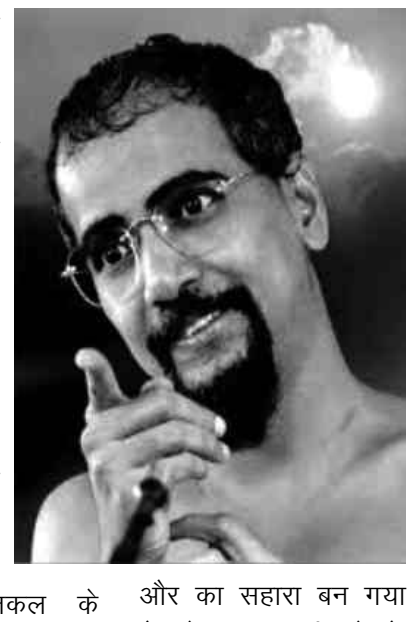

एक महलनुमा बंगला है। उसमें केवल दो लोग रहते है। बूढ़ा और बुढ़िया। उनके दो बेटे और एक बेटी है। बेटे अमेरिका में रहते हैं। बेटी–दामाद लंदन में। कभी – कभार बेटों के फोन आ जाते हैं और समाचार ले लेते हैं। बस आजकल के अधिकतर माँ–बाप को बेटों से इतना ही सुख है। बेटों के होने का सुख है, बेटों का नहीं।वे बेसहारा हैं। उनके बुढ़ापे का सहारा किसी

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–मोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एम.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com